2023-2024

UGC CARE LISTED
ISSN No.2394-5990

संशोधक

वर्ष : ९१ • डिसेंबर २०२३ • पुरवणी विशेषांक ०६

G20 भारत 2023 INDIA

।। श्री विश्वनाथो विजयते ।।

स्थापना : ९ जानेवारी १९२७

प्रकाशक : इतिहासाचार्य वि.का.राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे

Dr. R. C. Patil

UGC CARE LISTED
ISSN No. 2394-5990

इतिहासाचार्य वि. का. राजवाडे मंडळ, धुळे
या संस्थेचे त्रैमासिक

।। संशोधक ।।

पुरवणी अंक ६ – डिसेंबर २०२३ (त्रैमासिक)

- शके १९४५ • वर्ष : ९१ • पुरवणी अंक : ६

संपादक मंडळ

- प्राचार्य डॉ. सर्जेराव भामरे
- प्राचार्य डॉ. अनिल माणिक बैसाणे
- प्रा. डॉ. मृदुला वर्मा
- प्रा. श्रीपाद नांदेडकर

अतिथी संपादक

- डॉ. प्रदीप माणिकराव शिंदे • प्रा. डॉ. सुभाष वाघमारे • प्राचार्य डॉ. राजेंद्र मोरे

✷ प्रकाशक ✷

श्री. संजय मुंदडा

कार्याध्यक्ष, इ. वि. का. राजवाडे संशोधन मंडळ, धुळे ४२४००१
दूरध्वनी (०२५६२) २३३८४८, ९४२२२८९४७१, ९४०४५७७०२०

कार्यालयीन वेळ

सकाळी ९.३० ते १.००, सायंकाळी ४.३० ते ८.०० (रविवारी सुट्टी)

मूल्य रु. १००/-
वार्षिक वर्गणी रु. ५००/-, आजीव वर्गणी रु. ५०००/- (१४ वर्षे)

विशेष सूचना : संशोधक त्रैमासिकाची वर्गणी चेक/ड्राफ्टने 'संशोधक त्रैमासिक राजवाडे मंडळ, धुळे' या नावाने पाठवावी.

अक्षरजुळणी : सौ. सीमा शिंत्रे, वारजे-माळवाडी, पुणे ५८.

महाराष्ट्र राज्य साहित्य आणि संस्कृती मंडळाने या नियतकालिकेच्या प्रकाशनार्थ अनुदान दिले आहे. या नियतकालिकेतील लेखकांच्या विचारांशी मंडळ व शासन सहमत असेलच असे नाही.

ISSN No. 2394-5990

33. विश्वशांति और विकास में हिन्दी नाट्य साहित्य का योगदान
(एक कंठ विषपायी काव्य–नाटक के विशेष संदर्भ में)
-डॉ. प्रमोद परदेशी -- 123

34. विश्वशांति के विकास में हिंदी सिनेमा का योगदान ।
-डॉ. विजया जगन्नाथ पिंजारी ---126

35. विश्वशांति और हिंदी सिनेमा : विश्वशांति के मूलाधार मानव अधिकारो कि मांग करता हुआ
21 वी सदी का हिंदी सिनेमा
-प्रा. बहिरम देवेंद्र मगनभाई --- 129

36. विश्वशान्ति एवं विकास में 'हिन्दी भाषा'का योगदान
-डॉ. संगिता दिपक माळी --- 132

37. रामधारी सिंह 'दिनकर' के 'कुरुक्षेत्र' में चित्रित विश्वशांति की भावना
-लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील -- 136

38. विश्वशांति एवं विकास में भारतीय संस्कृति का योगदान
-प्रा. संपतराव सदाशिव जाधव -- 139

39. विश्वशांति एवं विकास में हिंदी भाषा का योगदान
-डॉ. रेशमा लोंढे --- 142

40. विश्वशांति एवं मानवता में रामधारी सिंह दिनकर का योगदान 'कुरूक्षेत्र' के संदर्भ में
-डॉ. वाघमारे खंडूजी हानवतराव --- 146

41. विश्वशांति की प्रासंगिकता
- नानासाहेब बळीराम कदम -- 151

42. 'गर्भनाल' का समसामयिक साहित्य : विश्व शांति एवं विकास के परिप्रेक्ष्य में
-शोभा सुभाषचंद्र पाटील -- 153

रामधारी सिंह 'दिनकर' के 'कुरुक्षेत्र' में चित्रित विश्वशांति की भावना

लेफ्टनंट डॉ. रविंद्र पाटील
अध्यक्ष, हिंदी विभाग,
राजर्षि छत्रपति शाहू कॉलेज, कोल्हापुर (महाराष्ट्र)
ई-मेल : rcpatilshahu@gmail.com
मो. 9552564248 / 9307144065

शोध सार :

'कुरुक्षेत्र' दूसरे विश्वयुद्ध के प्रति उनके संवेगात्मक वैचारिक प्रक्रिया या सृजनात्मक परिणाम है। युद्ध में हुए विनाश को देखकर युधिष्ठिर के मन में युद्ध विरोधी और वैराग्य की भावना जन्म लेती है। प्रस्तुत कविता में युद्ध जैसी समस्या को उठाया है। इन संदर्भो को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। प्रस्तुत काव्य के माध्यम से कवि कहते है कि वर्तमान परिवेश में मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों का गुलाम है। यह विश्वशांति के लिए बहुत बडी बाधा है। 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से ङदिनकरफ आधुनिक समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं। वे इससे शास्वत शांति का मार्ग खोजना चाहते हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से आधुनिक चिंतन प्रवाह का समर्थन उन्होंने किया है। उनका मानना है कि वर्तमान समय में युद्ध या संघर्ष का सीधा संबंध सिर्फ किसी व्यक्ति विशेष से संबंधीत न होकर सामुहिक बन गयी है। युद्धस्थल पर क्षतिग्रस्त भीष्म पितामह अन्याय का विरोध करने के लिए मनोबल से बढकर शस्त्र को अधिक महत्त्व देते हैं। कवि का मानना है कि बौद्धिक ज्ञान लोगों में संघर्ष उत्पन्न करता है और भावना शांति का निर्माण करती है। ङदिनकरफ ने मनुष्य के व्यक्तित्ववादी दृष्टिकोन का कडा विरोध किया है। वे मनुष्य के पतन के लिए व्यक्तित्ववादी दृष्टिकोन को जिम्मेदार मानते हैं। वे युद्धस्थल पर भीष्म पितामह से कहते है कि जीवन में व्यक्तिगत सुख पाना बिल्कुल ही कठिण नहीं है।

शोध विषय :

'कुरुक्षेत्र' रामधारी सिंह 'दिनकर' की बहुचर्चित कविता है। यह कविता ङदिनकरफ के व्यक्तित्व कृतित्व की मूल प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करती है। 'कुरुक्षेत्र' दूसरे विश्व-युद्ध के प्रति उनके संवेगात्मक वैचारिक प्रतिक्रिया का ही सृजनात्मक परिणाम है। यह एक प्रबंधकाव्य है। कौरव और पांडवों के बीच चले 'कुरुक्षेत्र' का युद्ध समाप्त हो जाता है। युधिष्ठिर युद्ध में हुए विनाश को देखते हैं। इससे उनके मन में युद्ध विरोधी और वैराग्य की भावना जन्म लेती है। युद्धभूमि मे मरणासन्न भीष्म पितामह युद्ध की अनिवार्यता के संबंध में युधिष्ठिर को कुछ महत्वपूर्ण वाते वताते हैं। वास्तव में इस काव्य की केंद्रीय स्थापना भी यही से होती है।

''कुरुक्षेत्र' के संदर्भ में डॉ. हरदयाल लिखते हैं, 'कुरुक्षेत्र' में दिनकर हिंसा और अहिंसा, युद्ध और शांति, आपधर्म और परधर्म, वैज्ञानिक प्रगति के कुफल और सुफल जैसे द्वंद्वों पर चिंतनरत है। इसीलिए वे द्वंद्वग्रस्त है और स्वाभाविक ही उनकी द्वंद्वग्रस्तता उनके चिंतन में अभिव्यक्त हुई है।''[1]

प्रस्तुत महाकाव्य में युद्ध जैसी ज्वलंत समस्या का समाधान निकालने के लिए युधिष्ठिर तथा भीष्म पितामह दोनों आपस में वार्तालाप कर रहे हैं। ये दोनों व्यक्ति भारतीय संस्कृति के आदर्श है। इन दोनों की महानता का सबसे बडा कारण हमारी संस्कृति है।

'कुरुक्षेत्र' का युद्ध समाप्त हो जाता है। युद्ध में कौरव हारे हैं, पांडव विजय के उल्लास में मग्न है परंतु युधिष्ठिर काफी दु:खी है। क्योंकी उन्होंने अपनी आँखो से बालहीन माताओं, पितृहीन बालकों, पतिहीन स्त्रियों के आर्तनाट युद्धस्थल, करून क्रंदन, वारों के रक्तसने शवों, भायों के मृत शरीर आदि दृश्यों को देखकर काफी दु:खी हो जाते हैं। उन्हें लगता है कि युद्ध में वीरगति प्राप्त करनेवाला दुर्योधन सौभाग्यशाली था कि उसे यह सब भयानक दृष्य देखना तो नहीं पडा,

''वीरगति पाकर सुयोधन चला गया है,
छोड मेरे सामने अशेष ध्वंस का प्रसार,
छोड मेरे हाथ में शरीर निज प्राणहीन,
व्योम में बजाता जय-दुदुभि सा बार-वार
और यह मृतक शरीर जो बचा है शेष,
चुप-चुप मानों पूछता है मुझसे पुकार
विजय का एक उपहार मैं बचा हूँ, बोलो,
जीत किसकी है और किसकी हुई है हार?''[2]

 ISSN No. 2394-5990

युद्ध के भयानक परिणामों को देखने के पश्चात युधिष्ठिर के मन में युद्ध विरोध की भावना निर्माण होती है। वे युद्धस्थल पर मृत्युशय्या पर पडे भीष्म पितामह के सामने अपनी युद्ध विरोधी भावना को व्यक्त करते हैं। युधिष्ठिर और भीष्म दोनों ही युद्ध के लिए अपने आपको जिम्मेदार मानते हैं। युधिष्ठिर इसलिए कि उसके मन में राजवैभव की लालसा थी। अगर युधिष्ठिर के मन में यह लालसा न होती तो शायद यह युद्ध भी नहीं होता। भीष्म इस युद्ध के लिए अपने-आपको इसलिए जिम्मेदार मानते हैं कि उन्होंने अपने भीतर चलनेवाले कर्तव्य और स्नेह के द्वंद्व में कर्तव्य को चुना। कर्तव्य ने उनको कौरवों के साथ देने के लिए मजबुर किया। यदी भीष्म स्नेह को चुनते तो वे पांडवों की ओर चले जाते और शायद 'कुरुक्षेत्र' का युद्ध भी नहीं होता। युद्ध की अनिवार्यता को देखते हुए भीष्म निराश नहीं दिखाई देते। उन्हें विश्वास है कि भविष्य में ऐसी स्थिति आ सकती है, जब युद्ध अनिवार्य नहीं रह जाएगा। वे युद्ध से निराश युधिष्ठिर को सलाह देते हैं कि निराश होने के बजाय मानव कल्याण के मार्ग पर आगे बढे समाज सेवा करें इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कवि लिखते हैं,

''पोंछो अश्रु, उठो, द्रुत जाओ, वन में नहीं, भुवन में
होओ खडे, असंख्य नरों की आशा बन जीवन में।
बुला रहा निष्काम कर्म वह, बुला रही है गीता,
बुला रही है तुम्हें आर्त हो मही समर संभीता।''[3]

कवि 'दिनकर' ने 'कुरुक्षेत्र' में युद्ध जैसी समस्या को उठाया है वे मूल रूप में महाभारत में हैं। परंतु 'दिनकर' ने इन समस्याओं को आधुनिक संदर्भ में प्रस्तुत किया है। उसे आधुनिक रूप देने का सफल प्रयास किया है। 'कुरुक्षेत्र' में 'दिनकर' ने भीष्म पितामह के माध्यम से समता पर आधारित शासकहीन समाज का चित्र प्रस्तुत किया है। कवि का कहना है कि वर्तमान समय में हिंसा और युद्ध चाहे अनिर्वाय हो, परंतु भविष्य में एक दिन ऐसा आएगा जब मनुष्य युद्ध जैसी समस्याओं से काफी दूर चला जायेगा। इसी बात को ध्यान में रखते हुए भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते हैं,

''आशा के प्रदीप को जलाये चलो धर्मराज
एक दिन होगी मुक्त भूमि रण-भीति से।
भावना मनुष्य की न राग में रहेगी लिप्त,
सेवित रहेगा नहीं जीवन अनीति से।
हार से मनुष्य की न महिमा घटेगी और,
तेज न बढेगा किसी मानव का जीत से।
स्नेह बलिदान होंगे माप नरता एक,
धरती मनुष्य की बनेगी स्वर्ग प्रीति से।''[4]

युद्ध जैसी समस्या को लेकर 'दिनकर' जहाँ बौद्धिक नहीं हैं वहीं दूसरी ओर वे भावुक भी दिखाई देते हैं। इसलिए उनका चिंतन द्वंद्व से भरी हुई है। 'कुरुक्षेत्र' को पडते समय कवि के भाववेग का अनुभव बराबर होता है।

'कुरुक्षेत्र' के द्वितीय सर्ग में युधिष्ठिर शंका से भरे विचारों को व्यक्त करते हुए कहते है कि अगर महाभारत का यह विध्वसंक नरसंहार मुझे पहिले से पता होता तो मैं युद्ध का विरोध करता। अपनी मनोबल और तपस्या के बल पर दुर्योधन का मन परिवर्तन करने का प्रयास करता और नव युग निर्माण करने की कोशिश करता। इतना सबकुछ करने पर भी अगर दुर्योधन नहीं मानता तो मैं भाईयों, संबंधियों और गुरुजनों के विरुद्ध युद्ध नहीं करता, चाहे मुझे भीख माँगने की नौबत आती तो भी मैं उसे ख़ुशी से स्वीकार करता इस प्रसंग का वर्णन करते हुए कवि 'दिनकर' लिखते है,

''जानता कहीं तो परिणाम महाभारत का
तन बल छोड मैं मनोबल से लडता।
तप से सहिष्णुता से, त्याग से सुयोधन को
जीत नई नींव इतिहास की मैं कहता।
और कहीं वज्र न गलता मेरी आह से जो
मेरे तप से नहीं सुयोधन सुधारता।
तो भी हाय रक्तपात नहीं करता, मैं
भाईयों के संग कहीं भीख माँग मरता।''[5]

पूरे महाभारत में युधिष्ठिर सत्य,शांति और अहिंसा के समर्थक के रूप में उभरकर आते हैं। जब 'कुरुक्षेत्र' का युद्ध समाप्त होता है,उसके परिणामों को अपनी आँखों से देखते हैं तो उनका शांत हृदय अशांत हो उठता है। प्रस्तुत काव्य में धर्मराज युधिष्ठिर भारतीय संस्कृति के धोतक के रूप में चित्रित है। उनका हृदय संस्कृति के सिद्धांतो से भरा हुआ है। वे स्वांत सुखों की अपेक्षा पूरे राष्ट्र के सुख को अधिक महत्त्व देते हैं। वे किसी का बदला लेना चाहते नहीं है। वे सहनसिलता को सबसे अधिक महत्व देते हैं।

युद्ध में हुए अपनों के संहार के कारण दुःख एवं पश्चाताप की चोट खाए युधिष्ठिर को बताते हुए पितामह भीष्म कहते है मेरी भी इच्छा है कि इस संसार से संघर्ष नाम की भावना समाप्त हो जाय और विश्व के सभी जीव-जंतुओं में प्रेम और दया की भावना जागृत हो जाय। पूरे विश्व में विश्वशांति की भावना स्थापित हो जाय। पूरे संसार के मानव प्रेम और दया में लीन होकर विश्वशांति की भावना का प्रचार-प्रसार करें। इस प्रसंग का यथार्थ वर्णन करते हुए कवि एक प्रसंग में लिखते हैं, मैं भी हूँ सोचता जगत से

"कैसे उठे जिज्ञासा।
किस प्रकार फैले पृथ्वी पर
करुणा, प्रेम, अहिंसा ।
जिए मनुज किस भाँति परस्पर
होकर भाई-भाई ।।
कैसे रुके प्रवाह क्रोध का
कैसे रुके लडाई ।।
पृथ्वी पर हो साम्राज्य स्नेह का
जीवन स्निग्ध हो ।
मनुज प्रकृति से विदा सदा को
दाहक द्वेष गरल हो ।"[6]

वर्तमान परिवेश में मनुष्य विभिन्न परिस्थितियों का गुलाम है। यह विश्वशांति के लिए बहुत बडी बाधा है। इसके लिए स्वयं मनुष्य जिम्मेदार है। सभी को एक-दूसरे की स्थिति के बारे में अच्छी तरह से जानना महत्वपूर्ण है। एक मनुष्य दूसरे को मनुष्य समझे ऊँच-नीच छोटे बडे की भावना का पूरी तरह से त्याग करना आवश्यक है ताकि सभी में विश्वबंधुत्व की भावना का प्रचार प्रसार हो। मनुष्य के अच्छे व्यवहार का सदउपयोग मनुष्य के शारीरिक, मानसिक और बौद्धिक स्थिति पर निश्चित ही होता है। जिससे अच्छे समाज की निर्मिती होती है। 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से दिनकर जी आधुनिक समस्याओं का समाधान करना चाहते हैं। वे इससे शास्वत शांति का मार्ग खोजना चाहते हैं। प्रस्तुत कविता के माध्यम से आधुनिक चिंतन प्रवाह का समर्थन उन्होंने किया है। वर्तमान परिस्थिति में युद्ध या संघर्ष का सीधा सबंध सिर्फ किसी व्यक्ति विशेष से संबंधीत न होकर पूरे समाज या समुदाय से हो गया है। इसी के परिणाम के चलते पूरी मानवता ही इस समस्या से प्रभावित है। ऐसी परिस्थिति में घृणा व्यक्तिगत न होकर सामूहिक बन गयी है। युद्धस्थल पर क्षतिग्रस्त भीष्म पितामह अन्याय का विरोध करने के लिए मनोबल से बढ़कर शस्त्र को अधिक महत्व देते हैं। जब भी इस पूरे संसार में मनुष्य जाति का शोषण हुआ है, तभी जन शक्ति अपने हाथ में शस्त्र लेकर खडी हो गई है। वर्तमान समय में मनुष्य जितना अपने आपको शांति प्रेमी कह रहा है उतना ही वह विज्ञान में प्रगति कर रहा है। उसने प्रकृति पर भी विजय प्राप्त किया है। फिर भी वह संतुष्ट नहीं है। मनुष्य जाति का यह असंतोष ही उसे शांति के मार्ग पर चलने से रोकता है। वैज्ञानिक युग की भयानक सभ्यता को केंद्र में रखकर कवि लिखते हैं,

"वह अभी पशु हैं,निरा, पशु हिंस्र, रक्त-पिपासू,
बुद्धी उसकी दानवी है, स्थूल की जिज्ञासू
कडकता उसमें किसीका जब कभी अभिमान
फूँकने लगते सभी मंत्र मृत्यु विषाण।"[7]

अत: कवि का मानना है कि बौद्धिक ज्ञान लोगों में संघर्ष उत्पन्न करता है और भावना शांति का निर्माण करती है। कवि 'दिनकर' ने मनुष्य के व्यक्तित्वादी दृष्टिकोण का कडा विरोध किया है। वे 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से बताना चाहते है कि आज हर कोई स्वार्थी बनता जा रहा है। किस प्रकार मनुष्य के मन में मनोविकार निर्माण हो रहा है। आज मनुष्य उस दशा तक पहुँच गया है कि उसे सिर्फ मार काट और तलवार की भाषा ही आती है। मनुष्य के इस पतन का सबसे बडा कारण उसका व्यक्तित्ववादी दृष्टिकोण ही है। तभी युद्धस्थल पर भीष्म पितामह युधिष्ठिर से कहते है कि जीवन में व्यक्तिगत सुख पाना बिल्कुल ही कठिण नहीं है।

निष्कर्ष :

अत: निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि 'कुरुक्षेत्र' महाकाव्य का यह संदेश वर्तमान समय के लोगों की आँखे खोलने में मदतगार साबित होता है। उन्हें विचार करने के लिए मजबूर कर देता है कि क्या? यही उसके जीवन का लक्ष्य है, जिसकी ओर वह अग्रेसर हो रहा है। इसी बात में कवि की सफलता रही है। कवि ङ्गदिनकरफ सकारात्मक दृष्टिकोन रखनेवाले व्यक्ति है। उनका मन आशावादी है 'कुरुक्षेत्र' के सप्तम सर्ग में वे भविष्य को लेकर आशावादी दिखाई देते हैं। उनका मानना है युद्ध ही अंतिम पर्याय नहीं है। अत: 'कुरुक्षेत्र' के माध्यम से कवि दिनकर विश्वशांति की भावना व्यक्त करते हैं।

संदर्भ :

1) सं. हरिवल्लभ सिंह 'आरसी' 'दिनकर स्मृति ग्रंथ' गोयल पेपर उद्योग, जमशेदपुर, झारखंड, प्रथम प्रकाशन 2008, पृ. 38
2) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' द्वितीय सर्ग, उद्याचल प्रकाशन,पटना, प्रथम सं. 1973, पृ. 07
3) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' सप्तम सर्ग, उद्याचल प्रकाशन, प्रथम सं. 1973, पृ. 118
4) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' सप्तम सर्ग, उद्याचल प्रकाशन, पटना, पृ. 122
5) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' द्वितीय सर्ग, उद्याचल प्रकाशन, पटना, प्रथम सं. 1973, पृ. 08
6) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' उद्याचल प्रकाशन, पटना, प्रथम सं. पृ. 28
7) रामधारी सिंह 'दिनकर' 'कुरुक्षेत्र' उद्याचल प्रकाशन, पटना, प्रथम सं. 1973, षष्ठ, पृ. 115